बी.ए.पी.एस.स्वामिनारायण संस्था

प्रेरक : परम पूज्य महंतस्वामी महाराज

प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी महोत्सव
1921-2021

1819-2019 200
वचनामृत
द्विशताब्दी महोत्सव

युवा अधिवेशन 2019

प्राथमिक मुखपाठ

सत्संग प्रवृत्ति मध्यस्थ कार्यालय

आरती

जय स्वामिनारायण, जय अक्षरपुरुषोत्तम,
अक्षरुपुरुषोत्तम जय, दर्शन सर्वोत्तम...
जय स्वामिनारायण... टेक

मुक्त अनंत सुपूतिज, सुंदर साकारम्, (2)
सर्वोपरी करुणाकर (2), मानव तनुधारम्.. जय. 1.

पुरुषोत्तम परब्रह्म, श्रीहरि सहजानंद, (2)
अक्षरब्रह्म अनादि (2), गुणातीतानंद.. जय. 2.

प्रकट सदा सर्वकर्ता, परम मुक्तिदाता, (2)
धर्म एकांतिक स्थापक (2), भक्ति परित्राता.. जय. 3.

दासभाव दिव्यता सह, ब्रह्मरुपे प्रीति, (2)
सुहृदभाव अलौकिक (2), स्थापित शुभ रीति.. जय. 4.

धन्य धन्य मम जीवन, तव शरणे सुफलम्, (2)
यज्ञपुरुष प्रवर्तित (2), सिद्धान्तं सुखदम्.. जय. 5.

जय स्वामिनारायण, जय अक्षरपुरुषोत्तम...

दंडवत् प्रणाम के समय की प्रार्थना

कृपा करो मुझ पर हरि, सुखनिधि सहजानन्द;
आपके गुनगान करने, बुद्धि दो भगवन्त. ° 1

अक्षर-पुरुषोत्तम यहाँ, भये प्रकट भूतल पर प्रभु;
अनेक जीव उद्धारने को, मनुज तन लीनी विभु. ° 2

ईष्टदेव और गुरुपरंपरा की वंदना-स्तुति

आए अक्षरधाम से अवनी पे, ऐश्वर्य-मुक्तों सहि,
सोहे अक्षर साथ सुंदर छवि, लावण्य तेजोमयी;
कर्ता दिव्य सदा रहे प्रकट जो, साकार सर्वोपरि,
सहजानंद! कृपालु को नित नमूँ, सर्वावतारी हरि. ° 1

जो हैं अक्षरधाम दिव्य हरि का, जामे बसे मुक्त हैं,
मायापार करे शरण्य जीव को, जो मोक्ष का द्वार हैं;
ब्रह्मांडों अणुतुल्य रोम उड़ते, सेवे परब्रह्म को,
ऐसे अक्षरब्रह्म को नित नमूँ, गुणातीतानंद जो.° 2

श्रीमन्निर्गुण मूर्ति सुन्दर तनू, जो ज्ञान-वार्ता कहे,
जो सर्वज्ञ, समस्त साधुगुण हैं, माया परे दिव्य हैं;
सर्वैश्वर्य - सुपूर्ण भक्तजन के, दुष्कृत्य जो टालते,
ऐसे प्रागजी भक्तराज गुरु को, वन्दूँ सदा भाव रे.° 3

जाकी संस्मृति मात्र से मलिनता, मन की समूली जले,
जाके आश्रय के महान बल से, संसार-फेरे टले;
जाकी कीर्ति सुभक्त विश्वभर में, गाये सभी चाव से,
शास्त्रीजी महाराज के चरण में, वन्दूँ सदा भाव से.° 4

वाणी है जिनकी सुधा-मधुभरी, संजीवनी सृष्टि की,
नैनों में भरी दिव्यता निरखते, जो सर्व को द्विय ही;
कोटी मात समान प्रेम बरसे, शोभे सदा हास्य से,
ऐसे ज्ञानजी योगीराज गुरु को, वन्दूँ सदा भाव से.° 5

सोहे सद्गुण पूर्ण जो सरल हैं, जग से अनासक्त हैं,
शास्त्रीजी गुरु योगीजी उभय की, कृपा भरा पात्र हैं;
धारी धर्मधुरा, समुद्र-सम हैं, गंभीर जो ज्ञान से,
नारायण-स्वरुपदास गुरु को, वन्दूँ सदा भाव से.° 6

सोहे सौम्य मुखारविंद हसितम्, नैना अमी से भरे,
वाणी है महिमाभरी मृदु तथा, अंतर हरि को धरे;
योगीराज प्रमुखजी हृदय से, जिनके गुणों से रीझे,
वंदूं संत महंत स्वामी गुरुजी! कल्याणकारी तुम्हें ° 7

ब्रह्मरुप से श्रीहरि के, चरण-अनुरागी बने,
ऐसी ही आशिष दास हम, करबद्ध होकर माँगते।

श्री स्वामिनारायण भगवान की जय,
अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की जय,
गुणातीतानंद स्वामी महाराज की जय,
भगतजी महाराज की जय,
शास्त्रीजी महाराज की जय,
योगीजी महाराज की जय....
महंतस्वामी महाराज की जय....

● ● ● ●